vinetur

# सिसिली के तट पर पुरातत्वविदों को रोमन जहाज़ का मलबा मिला, जिसमें वाइन के 1,500 तक साबुत अम्फोरा

असाधारण रूप से सुरक्षित यह माल 2,000 साल से भी पहले रोमन वाइन के उत्तरी अफ्रीका पहुंचने के तरीके पर रोशनी डाल सकता है

सोमवार, 9 नवंबर 2026



दक्षिण-पश्चिमी सिसिली के तट पर वाइन के अम्फोरा से भरे एक रोमन जहाज़ का मलबा मिला है। पुरातत्वविदों का कहना है कि यह खोज रोमन गणराज्य के अंतिम दौर में भूमध्यसागरीय व्यापार की समझ को बेहतर कर सकती है और 2,000 साल से भी पहले वाइन की पैकिंग तथा ढुलाई के तरीकों की दुर्लभ झलक दे सकती है।

सिसिली के अधिकारियों ने अगस्त में माजारा डेल वालो के पास इस स्थल की शुरुआती जांच के बाद खोज की घोषणा की। यह द्वीप के दक्षिण-पश्चिमी तट पर स्थित एक मछुआरा नगर है। मलबा तट से करीब 3 मील दूर और लगभग 150 फीट की गहराई में है। पुरातत्वविदों के मुताबिक, माल में कम से कम 500 मिट्टी के अम्फोरा हैं और इनकी संख्या 1,500 या उससे अधिक भी हो सकती है। इनमें से कई अब भी साबुत हैं और अपनी जगह पर एक के ऊपर एक रखे हुए हैं।

इस स्थल का पता जून में संयोगवश जियाकोमो दे मोला और इगोर बिसुल्ली ने लगाया। ये दोनों अनुभवी स्पीयर फिशर एक प्रतियोगिता से पहले समुद्र तल का निरीक्षण कर रहे थे। दे मोला ने बताया कि सोनार से माजारा डेल वालो से करीब

3 से 4 मील दूर एक असामान्य रूप से बड़ी संरचना दिखाई दी थी। यह उन चट्टानी संरचनाओं से अलग थी, जिन्हें वे खोज रहे थे।

पूर्व फ्री-डाइविंग चैंपियन दे मोला मास्क और कैमरा लेकर समुद्र तल तक गए। वहां उन्हें करीब 70 फीट लंबा और 20 फीट चौड़ा अम्फोरा का एक समूह मिला, जो रेत से लगभग 8 फीट ऊपर उठा हुआ था। उन्होंने बाद में तकनीकी गोताखोरों और सिसिली के अधिकारियों से जुड़े संपर्कों को इसकी जानकारी दी, जिसके बाद औपचारिक पुरातात्विक जांच शुरू हुई।

शोधकर्ताओं का कहना है कि यह मलबा इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि यह भूमध्यसागर में मिला अब तक का सबसे बड़ा रोमन जहाज़ है, बल्कि इसलिए कि सिसिली के आसपास की दूसरी खोजों की तुलना में इसका आकार बड़ा है और इसकी हालत असामान्य रूप से अच्छी है। सिसिली के सांस्कृतिक विरासत विभाग और समुद्र संबंधी अधीक्षणालय के समुद्री पुरातत्वविद् रॉबर्टो ला रोक्का ने कहा कि आयामों के लिहाज से यह सिसिली के जलक्षेत्र में मिले सबसे बड़े जहाज़ी मलबों में से एक है।

जहाज़ का लकड़ी का ढांचा काफी समय पहले सड़ चुका है, हालांकि पुरातत्वविदों का मानना है कि उसके अवशेष अब भी समुद्र तल के नीचे दबे हो सकते हैं। लेकिन माल असाधारण रूप से अच्छी हालत में बचा हुआ दिखता है। ला रोक्का ने कहा कि अम्फोरा की जमावट से लगता है कि इस स्थल को लूटा नहीं गया है। अपेक्षाकृत उथले पानी में और तट के इतने करीब मिले प्राचीन मलबे के मामले में ऐसा होना असामान्य है।

यह बात इसलिए अहम है क्योंकि सिसिली के आसपास कई पानी के भीतर स्थित पुरातात्विक स्थलों को लूटपाट से नुकसान पहुंचा है। जुलाई में मलबे का पहला 3D सर्वेक्षण करने वाले स्वतंत्र अंडरवॉटर एक्सप्लोरर फैबियो पोर्टेला ने कहा कि इच्छुक पुरावस्तु शिकारी लंबे समय से मनोरंजक गोताखोरी की सामान्य सीमा से अधिक गहराई तक पहुंचने में सक्षम रहे हैं। उन्होंने बताया कि सिसिली के गोताखोर 1960 के दशक से ही गहरे स्थलों से पुरावशेष निकाल रहे थे।

प्राचीन अम्फोरा लुटेरों के लिए आकर्षक निशाना थे, क्योंकि उन्हें आसानी से ले जाया जा सकता है और बाजार में उनकी अच्छी मांग है। मिट्टी के इन पात्रों में अक्सर करीब छह गैलन वाइन आती थी और खाली होने पर भी उनका वजन लगभग 50 पाउंड हो सकता था। पुरातत्वविदों का कहना है कि समय के साथ किसी मलबे से एक बार में एक या दो अम्फोरा निकालकर उसे खाली किया जा सकता है। मछली पकड़ने के जाल भी अक्सर पात्रों को तोड़कर और पुरावशेषों को समुद्र तल पर बिखेरकर अतिरिक्त नुकसान पहुंचाते थे।

शोधकर्ताओं का मानना है कि कई कारणों से माजारा डेल वालो का स्थल सुरक्षित रहा होगा। पोर्टेला ने कहा कि मलबे के चारों ओर चट्टानें हैं, जिन्होंने संभवत: समुद्र तल पर चलने वाले ट्रॉलिंग जालों से इसे बचाया। सोनार पर यह संरचना जांच के लायक माल के स्थल के बजाय बड़ी चट्टान जैसी भी दिखी होगी। उन्होंने कहा कि इस इलाके में मछली पकड़ने की मजबूत परंपरा है, लेकिन सिराक्यूज़, कैटानिया और पलेर्मो जैसी जगहों के मुकाबले गोताखोरी की संस्कृति कमजोर है। इसकी एक वजह यह है कि यहां का पानी अक्सर धुंधला रहता है और दृश्यता कम होती है।

पुरातत्वविदों का यह भी मानना है कि जहाज़ के डूबने के तरीके ने उसे सुरक्षित रखने में मदद की। ला रोक्का ने कहा कि संभवत: तूफान के दौरान जहाज़ तेजी से डूब गया और चालक दल अपने सभी लंगर डाल नहीं पाया। सीसे के दो लंगरों के अवशेष अब भी मलबे के साथ जुड़े हुए हैं। तेजी से डूबने के कारण जहाज़ सीधा नीचे गया होगा, जिससे माल समुद्र तल पर बिखरने के बजाय व्यवस्थित ढेरों में बना रहा।

इस मलबे का ऐतिहासिक महत्व भी व्यापक हो सकता है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के पुरातत्वविद् जस्टिन लीडवांगर ने कहा कि ज्यादातर अम्फोरा Dressel 1A किस्म के दिखते हैं। दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व में यह आम तौर पर इस्तेमाल होने वाला एक प्रकार था। स्पेन, फ्रांस और इटली के बड़े हिस्से के पास जहाज़ी मलबों में ये अम्फोरा अक्सर मिलते हैं, लेकिन दक्षिण-पश्चिमी सिसिली के तट पर इनकी मौजूदगी जहाज़ के मार्ग और गंतव्य को लेकर सवाल खड़े

करती है।

मलबे की जगह को देखते हुए पुरातत्वविदों का मानना है कि जहाज़ उत्तरी अफ्रीका की ओर जा रहा होगा। लीडवांगर ने कहा कि अगर जहाज़ की अनुमानित उम्र की पुष्टि होती है, तो इससे संकेत मिल सकता है कि उत्तरी अफ्रीका को रोमन वाइन का निर्यात कई विद्वानों की सोच से पहले ही बढ़ रहा था। यह उस दौर के अनुरूप होगा, जब रोमन व्यापारिक नेटवर्क तेजी से फैल रहे थे और इटली के कुलीन जमींदार कृषि तथा व्यापार में अधिक निवेश कर रहे थे।

लीडवांगर ने कहा कि संभवत: यह माल मध्य इटली से आया था, लेकिन शोधकर्ता इसे अभी तय तथ्य नहीं मान रहे हैं। अम्फोरा की जमावट से यह पता लगाने में मदद मिल सकती है कि खेप किसी एक बड़े खेत से आई थी या कई उत्पादकों ने ढुलाई के लिए अपना माल एक साथ भेजा था। पात्रों पर बची कोई मुहर या शिलालेख अधिक सटीक सबूत दे सकता है, हालांकि पुरातत्वविदों का कहना है कि ऐसी चीजें बहुत कम मिलती हैं।

हालांकि इसकी संभावना कम है, फिर भी हो सकता है कि अवशेष या निशान किसी अलग मूल की ओर इशारा करें। फ्रांस के संस्कृति मंत्रालय की समुद्री पुरातत्वविद् और कोर्सिका में पानी के भीतर पुरातत्व की प्रभारी फ्रांका चिबेकिनी ने कहा कि अगर सबूत मिले कि वाइन सिसिली में बनी थी, तो यह बड़ी खोज होगी, क्योंकि विद्वान उस दौर में सिसिली के वाइन उत्पादन के बारे में बहुत कम जानते हैं।

पात्रों के भीतर की सामग्री नष्ट हो चुकी है या खराब हो गई है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि इनसे प्राचीन वाइन के बारे में अब भी बहुत कुछ जाना जा सकता है। उम्ब्रिया में Lungarotti Foundation के पुरातत्वविद् लोरेंजो लेप्री ने कहा कि रोमन वाइन आम तौर पर बहुत पके अंगूरों से बनाई जाती थी और अक्सर इतनी गाढ़ी या तेज होती थी कि उसे सीधे अम्फोरा से पीना संभव नहीं था। रोमन लोग आम तौर पर उसमें पानी मिलाते थे और उसका स्वाद बढ़ाने के लिए फल, मसाले या शहद डाल सकते थे। अम्फोरा के अंदरूनी हिस्से को आम तौर पर चीड़ के राल से सील किया जाता था, जिसका स्वाद पर भी असर पड़ता था।

अधिकारी कुछ अम्फोरा निकालकर उनका अध्ययन करने की योजना बना रहे हैं। इनमें वे पात्र भी शामिल हैं जिनके भीतर अवशेष अब भी फंसे हो सकते हैं। हालांकि, अधिकारी पूरे मलबे को बाहर निकालने का इरादा नहीं रखते। जांच के बाद स्थल को ज्यादातर उसी स्थिति में छोड़ने की उम्मीद है, ताकि उसका पुरातात्विक संदर्भ सुरक्षित रहे और स्वीकृत संचालकों के माध्यम से निगरानी में गोताखोरी की संभावना भी बनी रहे।

यह तरीका भूमध्यसागर के कुछ हिस्सों में अपनाई जाने वाली व्यापक नीति के अनुरूप है। अधिकारियों का कहना है कि पानी के भीतर मौजूद हर स्थल को भौतिक रूप से निकालकर सुरक्षित रखना असंभव है। ला रोक्का ने कहा कि महत्वपूर्ण खोजों को सार्वजनिक करना और उन्हें नियंत्रित सांस्कृतिक आकर्षणों में बदलना संरक्षण को मजबूत कर सकता है, क्योंकि इससे स्थानीय समुदायों को अवैध रूप से पुरावशेष निकालने के बजाय उनकी सुरक्षा को महत्व देने का आर्थिक कारण मिलता है।

फिलहाल पुरातत्वविद माजारा डेल वालो के मलबे का सर्वेक्षण और विश्लेषण जारी रखे हुए हैं। उनका कहना है कि यह सिसिली में प्राचीन वाइन के माल का सबसे स्पष्ट उदाहरणों में से एक हो सकता है, जो अब भी लगभग उसी तरह व्यवस्थित है जैसे जहाज़ के डूबने के समय था।